①

नाम:- शेख अंजुमतारा मो॰ यासीन
पता:- F-3 गली रूम न. 15, संजय नगर,
कमानी कुर्ला, मुंबई, 400070.

"मीठी नदी बचाओ। मुंबई बचाओ।"

"मीठी नदी बन गई है विष का प्याला
मानव के अत्याचार ने उसे यमदूत बना डाला
थी, जो जीवनदायिनी, क्यों बनी रणचंडिका
था मानव ने उसकी इज्जत पे हाथ डाला"।

जी हाँ! जिसप्रकार अपना सम्मान खो चुका मानव किसी भी सीमा को पार कर सकता है। उसीप्रकार अपना सम्मान गँवा बैठी इस मीठी नदी ने २६ जुलाई २००५ को अपनी सीमा पार करके मानव को यह ज्ञात कराया कि प्रकृति से छेड़छाड़ करना बहुत बड़ा पाप है। और जिसप्रकार मानव ने मीठी नदी को दूषित करके, उसे सँकरा बनाके जो पाप किया है। उसका सम्मान छीना है। तो उसे दंडित करने के लिए मीठी नदी ने यह भयंकर रूप दिखाया। जिसके कारण हजारों लोग काल के गाल में समा गए।

महाराष्ट्र में अरब सागर होने के कारण यहाँ का अत्याधिक जल खारा होता है। परंतु झरनों और तालाब से निकलनेवाली इस नदी का जल मीठा है। इसी कारण यह नदी, 'मीठी नदी' के नाम से प्रसिद्ध है। मीठी नदी तुलसी तालाब और पवई तालाब के आगे पहाड़ी झरनों से निकलती हुई, मरोल पाइप लाइन, साकीनाका, ऐयरपोर्ट के किनारे से होते हुए बांद्रा कॉम्पलक्स के आगे बांद्रा खाड़ी में जाकर मिलती है।

किया। मीठी नदी सचमुच एक निर्दयी नदी है।

जिसने हजारों माँओं की गोद उजाड़ दी। हजारों सुहागन स्त्रियों के माथे का सिंदूर धोकर उन्हें विधवा बना दिया। हजारों लोगों की आँखों के सामने उनके आवास को नष्ट करके उन्हें बेघर बना दिया।

जी नहीं। क्योंकि अत्यधिक जनसंख्या होने के कारण लोगों ने उसके किनारों तक को नहीं छोड़ा और वहीं पर आवास बनाकर रहने लगे। जिसका परिणाम यह हुआ कि घनी बस्तियाँ बस गयीं और उसका क्षेत्रफल कम होता चला गया। यही नहीं तमाम कल-कारखानों, फैक्ट्रियों, और आवासी बस्तियों का गंदा पानी इसमें गिरता है। जिससे उसकी गरिमा नष्ट होती जा रही है। अधिक प्रदूषण और कूड़ा-कचरा डालने के कारण यह मीठी नदी पूरी तरह से प्रदूषित हो गई है। और इसके पानी का बहाव पूर्णरुप से अवरोधित हो गया। जिसका परिणाम हमें २६ जुलाई २००५ को भुगतना पड़ा। और ईश्वर का वरदान वर्षा ऋतु का जल मनुष्य के बुरे कर्मों का अभिशाप तब बन गया। जब मीठी नदी के पानी ने अपनी सीमा को लाँघकर मुंबई को डुबा दिया। और फिर जान की, माल की, जितनी क्षति हुई है उसका उल्लेख करना सरल नहीं है।

अब तो बस हमें यह पक्का निश्चय करना चाहिए। कि हमें उसका खोया हुआ सम्मान लौटाना है। और वह तभी संभव है, जब वहाँ की बस्तियों को हटाकर मीठी नदी का क्षेत्रफल बढ़ाया जाए। उसमें कूड़ा-कचरा डालने पर प्रतिबंध लगाया जाए और उसमें स्थित कूड़े-कचरे को हटाकर उसे स्वच्छ किया जाये। और उसके किनारों को विशाल और मजबूत बनाया जाए। अब यह प्रश्न उठता है कि, क्या बस्ती के लोग वहाँ की बस्ती खाली करने के लिए राजी होंगे? क्योंकि कहीं की भी बस्तियाँ खाली करा लेना इतना सरल नहीं है। तो जाहिर है कि मीठी नदी के किनारे जो घनी बस्ती बसी है उसे खाली करा लेना बहुत कठिन है। परंतु असंभव नहीं है। मेरा कहने का आशय यह है। कि यह संभव तो नहीं उन बस्तियों

में रहनेवाले सभी लोग धनसंपन्न होंगे। तो क्यों न सरकार उन्हें शहर में ही या फिर शहर से दूर खाली पड़ी ज़मीनों में मकान बनाकर रहने के लिए दे दें तो वह खुशी से उन बस्तियों को खाली कर देंगे।

हो सकता है। कि इसके लिए सरकार को लाखों रुपए खर्च करने पड़े। लेकिन सरकार को यह सोचना चाहिए कि जब लोग इस तरह की दुर्घटनों में मर जाते हैं। तो सरकार उनके परिजनों को पचास हजार या एक लाख रुपए की सहायता देती है। तो क्यों न सरकार इसतरह की कोई भी दुर्घटना होने से पहले ही उसका बंदोबस्त कर ले।

अगले मानसून के आने से पहले ही इस मीठीनदी के चारो ओर की बस्तियाँ खाली कराके उसको कूड़े-कचरे से स्वच्छ कराके उसे विशाल और मजबूत बना दिया जाये। तो इसतरह करके न सिर्फ हम मीठीनदी को बचायेंगे अपितु पूरी मुंबई को नष्ट होने से बचालेंगे। और अगले मानसून में मीठीनदी के प्रकोप से बचकर हजारों जानों को, हजारों घरों को, और सरकार के फिर से खर्च होनेवाले करोड़ो रुपयों को, लुटने से बचालेंगे। और इसी तरह से हम मीठी नदी को बचाकर मुंबई को बचालेंगे।

हम मुंबईवासियों का यह कर्तव्य है कि हमें सरकार के इस तरह के हर फैसले का स्वागत करना होगा। और पूरी निष्ठा से इसका सहयोग देना होगा।

नही तो ऐसा न हो कि हमें यह कहना पड़ जाए। कि

"फिर का करत होत, जब चिड़ियाँ चुग गई खेत"।

शेख अंजुमतारा
मोहम्मद यासीन

Seen 10/06